आचार्य श्री विमर्शसागर जी चालीसा

-: दोहा :-

नमन सिद्ध, पाठक, मुनि, प्रणमूँ श्री अरिहंत।
शुचि-शारद, सूरीवरा, जयतु जिनागम पंथ ।।

(आल्हा छंद)

भगवती के घर आँगन में, उदित हुआ शशिकर राकेश।
नगर जतारा मोद मनाता, खुश होते अग्रज राजेश।।

पन्द्रह नवम्बर सन तिहत्तर, आसमान आभामय था।
पिता सनतजी का घर-आँगन खुशियों से उत्सवमय था।।

बुद्धि कुशाग्र रही बचपन से, कंठ विराजी वाणी माँ।
हरपल आनंद छाया रहता, घर में थी गुडिया महिमा।।

कमला बड़ी बहिन का वत्सल, पाते थे तीनों भ्राता।
होनहार चक्रेश अनुज भी, सबका प्रेम सतत पाता।।

लेखन, गायन, नाट्य कला में, प्रखर तेजमय थे राकेश।
विद्यालय में सदा प्रथम ही, लक्ष्य प्राप्ति रहती उन्मेष ।।

शिक्षा-दीक्षा में प्रवीण हो, स्नातक करके उत्तीर्ण।
गुरुविराग की मिली सन्निधि, जैसे जीवन मिला नवीन ।।

छोड़ दिया मित्रों का संग भी, ब्रह्मचर्य व्रत कर स्वीकार।
सत्ताईस फरवरी पिचानवे, सिद्धक्षेत्र शुभ भूमि अहार।।

छियानवे की तेईस फरवरी, ऐलक दीक्षा के संस्कार।
हुए भव्य देवेंद्रनगर में, जन-जन की थी भीड़ अपार।।

अट्ठानवे दिसंबर चौदह, मुनिदीक्षा की घड़ी ललाम।
दीक्षा गुरु विरागसागर जी पावन तीर्थ बरासो धाम ।।

बढ़ते कदम भरत भूमि पर, पहुँचे मुनिवर राजस्थान।
बाँसवाड़ा धरती बागड़ की, रचते अद्भुत कीरतमान ।।

गणाचार्य श्री विरागसिंधु जी, वात्सल्य के पारावार।
श्रमणाचार्य प्रतिष्ठित कीन्हा, किये भव्य गुरु ने संस्कार।।

हे आदर्श महाकवि तुमने, दी कई कृतियों की सौगात ।
शब्द-शब्द अमृत छलका है, रच दी शंका की एक रात ।।

गीतांजलि आईना दिखाती, जीवन चलती हुई घड़ी।
जाहिद की गज़लें खुद कहती, अरे वाह क्या खूब कही।।

खूबसूरत लाइनें बोलती, प्रेम मेरा स्वीकार करो।
यही समर्पण के स्वर कहते, जो करना सो अभी करो।।

मानतुंग के मोती निकले, वह तूलिका निराली है।
गूँगी चीख की पीड़ा जाने, यह करुणा मतवाली है।।

जीवन है पानी की बूँद श्रुत महाकाव्य की उपमा जान।
अमरकृति साहित्य जगत् में, भक्तों कर लो गुरु गुणगान ।।

भरत जी घर में वैरागी थे, आओ सीखें जिनस्त्रोत ।
प्रश्न चटपटे स्वादिष्ट उत्तर सरुव थुदि देती शुभबोध ।।

हिंदी, प्राकृत, काव्यांजलि में, गुरुवर ने की कई टीकाएँ।
अप्पोदया विमर्शांजलि में आत्मबोध की उपमाएँ।।

सोचता हूँ कभी-कभी मैं, गुरुवर के बहुविध आयाम।
वृहद संघ के अधिनायक को, मेरे लाखों लाख प्रणाम।।

अद्वितीय पूजन शिविरों के, शिलालेख स्वर्णिम गुरुदेव।
इतराता हूँ, सखा रहा मैं, क्षण-क्षण हृदयंगम गुरुदेव ।।

दोहा

देश-धर्म का समर्पण, बतलाती मकरंद।
अमृतवाणी जब बहे, मिलता हर्षानंद ।।
संत भावलिंगी गुरु, दी मुझको शुभपंथ।
श्रीचरणों में समर्पित, कवि कमलेश बसंत ।।

रचयिता- डॉ. कमलेश जैन "बसंत" उपाचार्य, जैन कन्या महाविद्यालय तिजारा (अलवर) राजस्थान